❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।
अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 सितम्बर, 2017 से रविवार 24 सितम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

रोहिंग्या मुस्लिम पर पूरी दुनिया खामोश क्यों?

> *.....मुम्बई हमले के वक्त अल जजीरा की वेबसाइट ऐसी टिप्पणियों से भरी पड़ी थी कि मुसलमानों के लिये अल्लाह की शानदार विजय, मुम्बई में यहूदी केन्द्र में यहूदी रबाई और उसकी पत्नी की मृत्यु हृदय को सुख देने वाला समाचार इस्लामी मीडिया में बतलाया गया। हर किसी को याद होगा डेनमार्क के एक समाचार पत्र में प्रकाशित पैगंबर मोहम्मद के कार्टूनों पर हुई प्रतिक्रिया का आवेश जब अनेक देशों के झंडों और दूतावासों को आग लगायी गई थी। लंदन में प्रदर्शनकारियों की तख्तियों पर यहां तक लिखा था ''इस्लाम का अपमान करने वालों का सिर कलम कर दो।''....*

भारत के कई शहरों कोलकाता, लुधियाना, अलीगढ़ वगैरह में रोहिंग्या मुसलमानों के समर्थन में प्रदर्शन हो रहे हैं। रोते बिलखते बच्चों-महिलाओं के फोटो लगी तख्तियां लेकर कहा जा रहा है कि पूरी नस्ल को ख़त्म किया जा रहा है। बच्चों तक को भाले-बर्छियां भोंककर टांग दिया जा रहा है। औरतों की आबरू लूटी जा रही है। सवाल पूछा जा रहा है कि पूरी दुनिया ख़ामोश क्यों है?

इस्लामी क्रांति के वरिष्ठ नेता आयतुल्ला खुमेनी ने म्यांमार की घटनाओं पर अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं और मानवाधिकार के दावेदारों की चुप्पी व निष्क्रियता की निंदा करते हुए कहा है कि इस समस्या को हल करने का मार्ग, मुस्लिम देशों की व्यावहारिक कार्यवाही और म्यांमार की निर्दयी सरकार पर राजनैतिक व आर्थिक दबाव डालना है। इन सब मामलों में अक्सर मानवाधिकार संगठन निशाने पर जरूर होते हैं। लगता है वक्त के साथ अपनी दोगुली नीतियों के चलते आज मानवाधिकार संगठन भी अपनी प्रासंगिता खो बैठे हैं।

शरणार्थी मामलों के सभी पुराने कड़वे मीठे मामलों को देखते हुए रोहिंग्या शरणार्थियों का संकट ताजा है और म्यांमार के संदर्भ में दोनों सभ्यताओं और संस्कृतियों के संघर्ष को ध्यानपूर्वक देखें तो इसकी शुरुआत आज से नहीं बल्कि 16 वर्ष पहले उस समय हुई जब तालिबान ने 2001 में अफगानिस्तान के बामियान में बुद्ध की 2 सबसे बड़ी प्रतिमाओं को इस्लाम विरोधी करार देते हुए डायनामाइट लगाकर उड़ा दिया था। इसके बाद बौद्ध भिक्षु अशीन विराथू अपना 969 संगठन लेकर आए.। बुद्ध की प्रतिमा टूटना इसके बाद इस्लामिक मुल्कों की चुप्पी विराथू को जन्म दे गयी। जिसकी बेचेनी आज इस्लामिक मुल्कों में साफ देखी जा सकती है। लेकिन इस पूरे मामले में चीन, जापान, रूस से लेकर अमेरिका और यूरोप के शक्तिशाली देश तक मौन हैं क्यों?

दरअसल दुनिया की पहली प्राथमिकताओं में आज व्यापार सबसे ऊपर है। दूसरा डेनियल पाइप्स कहते हैं कि इस्लाम चौदह सौ वर्ष पुराना डेढ़ अरब से अधिक आस्थावानों का मजहब है जिसमें कि हिंसक जिहादी से शांत सूफी तक सभी आते हैं। मुसलमानों ने 600 से 1200 शताब्दी के मध्य उल्लेखनीय सैन्य, आर्थिक और मजहबी सफलता प्राप्त की। उस काल में मुस्लिम होने का अर्थ था एक विजयी टीम का सदस्य होना यह ऐसा तथ्य था जिसने कि मुसलमानों को इस बात के लिये प्रेरित किया कि वे अपनी आस्था को भौतिक सफलता के साथ जोड़ें। मध्य काल के उस गौरव की स्मृतियाँ न केवल जीवित हैं बल्कि उनको आधार बनाकर पुनः आज भी उसी स्वर्णिम काल को पाने की चाहत लिए बैठे हैं।

पिछले कुछ सालों के आंकड़े अतीत से उठाकर देखें तो इस्लाम के मानने वालों को जिस देश व सभ्यता ने शरण दी या तो उन सभ्यताओं को मिटाने का कार्य हुआ या आज इस्लाम का उन सभ्यताओं से सीधा टकराव है। एशिया यूरोप समेत अनेकों देश जिनमें फ्रांस से लेकर जर्मनी, अमेरिका आदि तक में यह जख्म देखे जा सकते हैं। ज्यादा पीछे न जाकर यदि 2010 के बाद के ही आंकड़े उठाकर देखें तो इस वर्ष रूस की एक मेट्रो को निशाना बनाया गया जिसमें 40 लोग मरे और 100 से ज्यादा जख्मी हुए, भारत में पुणे के 17 लोगों समेत विश्व भर में इस्लाम के नाम पर हुए हमलों में उस वर्ष करीब 673 लोग मारे गये। 2011 चीन में एक उइगर आतंकी द्वारा सड़क पर चलते करीब 15 लोगों को गाड़ी से कुचल कर मार डाला और 42 घायल हुए। दिल्ली में बम विस्फोट से 17 लोगों की जान समेत विश्व भर में 717 लोगों को आतंक के कारण जान से हाथ धोना पड़ा। 2012 में 799 तो 2013 में 768 लोगों को मजहबी सनक का शिकार बनाया गया। 2014 में रूस, फ्रांस, अमेरिका, केमरून, इज़राइल समेत इस वर्ष 2120 लोग मारे गये। 2015 में देखें तो डेनमार्क, ट्यूनीशिया, केन्या, अमेरिका, भारत, आस्ट्रेलिया, जर्मनी समेत विश्व के करीब 45 देशों में अलग-अलग 110 से ज्यादा हमले हुए जिनमें 3 हजार से ज्यादा लोगों को मौत की नींद सोना पड़ा। 2016-17 में जिहाद के नाम पर फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, बेल्जियम ब्रिटेन समेत करीब 100 से ज्यादा हिंसक घटनाओं को अंजाम दिया गया जिनमें 2 हजार से ज्यादा लोग मरे। अमेरिका स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में हजारों और मुम्बई हमले को भला कौन भुला सकता है जिनमें लगभग विश्व के सभी देशों के लोगों ने बड़ी संख्या में जान गंवाई थी।

– शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सहायक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की कार्यशाला सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रयास है कि सभी सहयोगियों के साथ ही सभा एवं सहायक संस्थाओं के कार्यकर्ता आपस में परिचय प्राप्त कर सकें कि कौन व्यक्ति किस जिम्मेदारियों को पूर्ण कर रहा है और एक टीम के रूप में कार्य करने का जो लाभ होना चाहिए उस दिशा में हम और आगे कैसे बढ़ें। इन सहायक संगठनों के सदस्यों को आधुनिक तौर-तरीकों से अवगत कराने तथा टीम भावना को मजबूत करके उनकी योग्यता को बढ़ाने और उनके व्यक्तित्व विकास की दिशा में कार्य करने के प्रयासों को और सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों, दयानन्द सेवाश्रम संघ के कर्मचारियों व आर्य समाज औचन्दी एवं दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय, अधिकारियों के बीच 16 सितम्बर को आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में एक कार्यशाला का आयोजन

कार्यशाला को सम्बोधित करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्तागण

– शेष पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

परम देवों की महती महिमा

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन् ये ब्रह्मणः पुरऽएतारो अस्य।
येभ्यो न ऋते पवते धाम किं चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु।। -यजु.17/14
ऋषिः **लोपामुद्रा।।** देवता - **प्राणः।।** छन्दः **आर्षीजगती।।**

शब्दार्थ - **ये देवाः**= जो देव **देवेषु अधि**= देवों के बीच में भी **देवत्वम्**= और ऊंचे देवत्व को **आयन्**= प्राप्त हुए हैं, ये= जो **अस्य ब्रह्मणः**= इस ब्रहत् संसार के **पुरः एतारः** = आगे चलने वाले व चलाने वाले हैं, **येभ्यः ऋते**= और जिनके बिना **किंचन धाम**= कोई भी धाम, कोई भी स्थान **न पवते**= पवित्र नहीं होता। **ते**= वे पूर्ण देव **न दिवो स्नुषु अधि**= न तो द्युलोक के किन्हीं प्रान्तों में रहते हैं **न पृथिव्याः**= और न पृथिवी के।

विनय - क्या तुम उन पूर्ण देवों को भी जानते हो जो देवों में भी और ऊंचे देव होते हैं और जिनके हाथ में इस महान् संसार की बागडोर रहती है? ये वे मुक्तात्मा हैं जो मुक्त होकर भी जगत के कल्याण में रत होते हैं। ये देवत्व का भी बन्धन छोड़कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के हो जाते हैं, ब्रह्माण्ड की आत्मा से अपनी आत्मा को मिलाकर देवों से भी ऊपर 'पूरे देव' हो जाते हैं। यह सब संसार जो अपनी परम आत्मा की ओर धीरे-धीरे जा रहा है उसमें ये ही अग्रणी हैं। उस परम आत्मा के सबसे निकटस्थ साधन बनकर ये ही इस संसार का संचालन कर रहे हैं। संसार में जो ईश्वरीय शक्तियां जीवों को असत् से सत् की ओर, तम से ज्योति की ओर और मृत्यु से अमृत की ओर ले-जा रही हैं, एक शब्द में जो शक्तियां हरदम इस संसार को पवित्र कर रही हैं, वे शक्तियां इन्हीं पूर्ण देवों के आनन्दमय व विज्ञानमय आदि केन्द्रों से प्रवाहित हो रही हैं। इसका यह मतलब नहीं कि ये देव किसी विशेष स्थान पर रहते हैं, जैसेकि साधारण देव लोग द्युलोक (प्रकाशमय लोक) में रहते हैं। ये किसी जगह भी नहीं रहते, पर शक्तिप्रवाह करने के लिए किसी भी जगह अपना केन्द्र बना सकते हैं। इनके बिना कोई भी स्थान (धाम) पवित्र नहीं हो सकता, परन्तु ये किसी स्थान पर भी रहते नहीं हैं। ये तो ब्रह्म में रहते हैं। सब ब्रह्माण्ड में रहते हैं। अपने शक्ति-प्रवाह से सब ब्रह्माण्ड को पवित्र कर रहे हैं। ये न तो द्युतोक के किन्हीं प्रान्तों में मिलेंगे, न पृथिवी के किन्हीं कोनों में मिलेंगे, परन्तु इस संसार का कोई भी धाम, कोई भी क्षेत्र, कोई भी लोक ऐसा नहीं है, जिसकी कि पवित्रता इन द्वारा न हो रही हो।

इन परम देवों को हम बद्ध जीवों का बार-बार नमस्कार हो, अवनतशिर होकर बार-बार नमस्कार हो।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

स्वामी जी का कथन कितना प्रासंगिक

.....समाचारपत्रों से यह भी जानकारी मिली है कि रेयान स्कूल के कुछ बच्चों और अभिभावक बता रहे हैं कि स्कूल की बाउंड्री के अंदर ही ड्राइवर लोग शराब पीते थे और ताश खेलते थे। .....स्वामी जी कहते हैं कि 'संस्कार उनको कहते हैं जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे हम पूछते हैं कि क्या ऐसी व्यवस्था में पढ़ने वाले बच्चे संस्कारवान बन सकते हैं?' शिक्षा का मंदिर जिसे स्कूल कहा जाता है ऊँचें भवन से या वहां के स्टाप के आचरण-व्यवहार से बड़ा बनता है यह भी लोगों को सोचना चाहिए।.....

आज जब सत्यार्थ प्रकाश के अंत में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः देख रहा था तो उसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा की परिभाषा देते हुए कहा है कि जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं। स्वामी जी के कथन को पढ़ने के बाद अचानक एक-एक कर शिक्षा के नाम पर देश के स्कूलों में बच्चों पर हो रहे शारीरिक, मानसिक अत्याचार याद आने लगे कि आखिर हमारी शिक्षा व्यवस्था कितने उत्तम शिखर से खिसककर कितने निम्न स्तर की ओर जा रही है। हाल ही में हुई गुडगाँव वाली घटना याद आने लगी। आखिर क्यों यह सब और किसके लिए हो रहा है? क्यों इस शिक्षा के लिए मासूम बच्चों को रोंदा जा रहा है। 7 वर्ष के छात्र प्रद्युम्न की हत्या के मामले की जांच को जैसे-जैसे पुलिस आगे बढ़ा रही है वैसे-वैसे स्कूल प्रशासन की लापरवाही की परतें दिन-प्रतिदिन खुलती नजर आ रही हैं।

सुनकर हैरानी भी होती है कि रेयान इंटरनेशनल स्कूल की लापरवाही की लिस्ट कितनी लम्बी है। स्कूल के छोटे बच्चे बता रहे हैं कि दो महीने पहले इसी स्कूल के प्रथम तल के टॉयलेट में कक्षा ग्यारह और बारह के बच्चे शराब पी रहे थे। जब स्कूल के छोटे बच्चों ने उनकी ये करतूत देख ली तो इन छात्रों ने उन्हें अंजाम भुगतने की धमकी दी थी। स्कूल में छोटी कक्षा के इन छात्रों ने जब इस बात की शिकायत रेयान स्कूल की सुपरवाइजर और स्कूल की स्पोर्ट्स टीचर से की तो उन्होंने इस बात को यहां पर दबा देने की बात कही गई और परिवार को भी न बताने की बच्चों को हिदायत दी थी।

आखिर हमारा समाज किस शिक्षा के लिए मारा-मारी में लगा है? क्यों इस शिक्षा के लिए मासूम बच्चों का मस्तिक प्रेशर कुकर बनाया जा रहा है? सिर्फ अपने स्थानीय समाज, परिवार और रिश्तेदारों को यह दिखाने के लिए कि देखिये हमारे बच्चे कितने महंगे स्कूल में पढ़ते हैं? इसके बाद जब यह बच्चे बड़े होते हैं तब इनमें एक दो डॉ. या इंजिनियर बनता है। वह खबर तो बड़ी बनाकर सुनाई जाती है लेकिन इनमें समाज और परिवार के प्रति जो नैतिकता शून्य होती है उसका वर्णन नहीं किया जाता। लगता है वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य केवल ऐसी शिक्षा का देना है जिसमें आर्थिक शक्ति का आगमन हो और बच्चे के अन्दर से मनुष्यता के बीज हमेशा के लिए मिटा दिए जायें।

समाचारपत्रों से यह भी जानकारी मिली है कि रेयान स्कूल के कुछ बच्चे और अभिभावक बता रहे हैं कि स्कूल की बाउंड्री के अंदर ही ड्राइवर लोग शराब पीते थे और ताश खेलते थे।

स्वामी जी कहते है कि 'संस्कार उनको कहते हैं कि जिससे शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे।' हम पूछते हैं कि क्या ऐसी व्यवस्था में पढ़ने वाले बच्चे संस्कारवान बन सकते हैं? शिक्षा का मंदिर जिसे स्कूल कहा जाता है, ऊँचें भवन से या वहां के स्टाफ के आचरण व्यवहार से बड़ा बनता है यह भी लोगों को सोचना चाहिए।

स्वामी जी आगे कहते हैं 'जो सत्य शिक्षा और विद्या को ग्रहण करने योग्य धर्मात्मा, विद्याग्रहण की इच्छा और आचार्य का प्रिय करने वाला हो शिष्य उस को कहते हैं।' लेकिन आज के मौजूदा दौर में यह पवित्र रिश्ता भी छिन्न-भिन्न हो चुका है। कहीं से खबर आती है कि बच्चों ने महिला अध्यापक पर फब्तियां कसीं तो किसी खबर में सुनने को मिलता है स्कूल में इंग्लिश की टीचर ने 13 साल के बच्चे से यौन सम्बन्ध बनाये। भला एक गौरवशाली परम्परावादी भारतीय समाज का इससे बिगड़ा रूप और क्या होगा? समय की मांग है कि बच्चों को अच्छे और बुरे स्पर्श के बारे में समझाएं। इसमें झिझक की कोई बात नही हैं, बल्कि ये बच्चों की सुरक्षा के लिए सबसे जरूरी कदमों में से एक है। उसके भीतर विश्वास भरें कि आप हर हाल में उसके साथ हैं ताकि वह खुलकर अपनी बात आपसे साझा कर सके। कई बार बच्चे आपस में भी छेड़छाड़ का शिकार होते हैं। जैसे बड़े बच्चे किसी बात को लेकर छोटी कक्षा के बच्चों को तंग करते हैं। कई बार यह तंग करना बच्चों को शारीरिक या भावनात्मक नुकसान पहुंचाता है। माना कि भौतिक और आर्थिक सफलता आज जरूरी है। अशिक्षित मनुष्य के सामने कोई राह नहीं होती। लेकिन शिक्षित को बड़ा ऑफीसर, डॉक्टर या फिर नेता बन जाना चाहिए लेकिन सवाल फिर वही आता है क्या बिना संस्कार, बिना नैतिकता के, बिना ऊँचे आदर्शों के यह सफलता समाज के लिए घातक नहीं होगी?

प्रद्युम्न मामले में एक वकील सुजीता श्रीवास्तव के माध्यम से दायर जनहित याचिका में स्कूल की चारदीवारी के भीतर बार-बार छात्रों के शोषण और बाल यौन शोषण की हो रही घटनाओं का मुद्दा उठाया है। जिसे लेकर समाज बिल्कुल भी जागरूक नहीं है लेकिन इस विषय पर समाज का एक बड़ा हिस्सा बात करना भी अनुचित या शर्म और संकोच का विषय समझता रहा है। यदि इक्का-दुक्का मामले सामने भी आये तो परिवारों ने मिलकर इस पर शर्म-संकोच का पर्दा डालने का कार्य किया और जिस कारण पूरे देश में बच्चों के साथ होने वाले अपराध लगातार बढ़ते जा रहे हैं। जबकि स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखते हैं कि जब आठ वर्ष के हो तभी लड़कियों को लड़कियों की और लड़कों को लड़कों की पाठशाला में भेज दिया जाये और दुष्टाचारी अध्यापक और अध्यापिकाओं से शिक्षा न दिलावें।

बचपन में घर और आस-पास का माहौल और स्कूल किसी भी बच्चे के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है। आधुनिक स्कूलों से निकले आचरण हीन अध्यापक, पैसा कमाने की मशीन बने स्कूल, नित्य बच्चों को बिगाड़ने के कारखाने खुलते जा रहे हैं। इसके बाद अक्सर बहुतेरे माता-पिता रोते दिख जाते हैं कि हमारा बेटा या बेटी हमारी बात नहीं सुनते और हम पर झल्लाते-चिल्लाते हैं तो सोचिये क्या आपने उसे इस नैतिक शिक्षा के लिए उसे स्कूल में भेजा था? वहां उसे जो मिला आज वह वही आपको दे रहा है। आज की शिक्षा व्यवस्था को देखकर लगता है कि स्वामी जी का कथन प्रासंगिक है। - ***सम्पादकीय***

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- ***सम्पादक***

आर्यसमाज और वेद प्रचार

- डॉ. महेश विद्यालंकार

.....जितना वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढ़ोंग-पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवन-दर्शन जगत को सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्य समाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है, वेद प्रचार घटने के कारण ही, आज अन्धविश्वास ढोंग-पाखण्ड, जड़पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म भक्ति और परमात्मा बाजार-व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड फैल रहा है, उसमें आर्य समाज प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभा सकता है।.....

''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'' ऐसा क्रांतिकारी उद्घोष ऋषि दयानन्द से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में इतने शंकराचार्य, पंथ, सम्प्रदाय, महन्त आदि हैं कोई भी वेदों के प्रति ऐसी, मान्यता व धारणा नहीं रखते हैं। ऋषि की महत्त्वपूर्ण विशेषता व देन है-वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों की मानो। वेद आज्ञा ही आज के भूले, भटके, अशान्ति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार अनाचार आदि में लिप्त मानव-समाज को सच्चे सुख: शान्ति प्रसन्नता, नीरोगता, विश्वमानवता का मार्ग दिखा सकता है। वेदज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक सार्वदेशिक तथा सार्वजनिक है। वेद परमात्मा का आदेश, उपदेश और सन्देश है। वेद ज्ञान इस देश की अद्वितीय सम्पदा है।

आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवित-जाग्रत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के अधूरे स्वप्नों व कार्यो की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, सभाओं, संस्थाओं एवं आर्य समाज की है। कोई संस्था, संगठन व महापुरुष अमर व जीवित विचारों और सिद्धान्तों से रहता है। ऋषि स्वयं में सिद्धान्त व विचार थे। वेद प्रचार आर्य समाज को विरासत, वसीयत एवं परम्परा में मिला है। आर्यो! ऋषि का अमर सन्देश गूंज रहा है-वेद-वेद-वेद-वेद करो, वेदानुकूल जीवन जीओ, वेद ज्ञान जन-जन तक पहुंचाओ जितना वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार होगा, उतना संसार से अज्ञान, जड़ता, पशुता, ढोंग-पाखण्ड आदि दूर होंगे। सच्चे अर्थ में मानव, मानव बन सकेगा। वेदों का जीवन-दर्शन जगत को सीधा सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाता है। आर्य समाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है, वेद प्रचार घटने के कारण ही, आज अन्धविश्वास ढोंग-पाखण्ड, जड़पूजा, गुरुवाद आदि बढ़ रहा है। धर्म भक्ति और परमात्मा बाजार-व्यापार बन रहे हैं। धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है। जो आज धार्मिक क्षेत्र में अन्धकार व पाखण्ड फैल रहा है, उसमें आर्य समाज प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभा सकता है। कभी आर्य समाज जागते रहो, की भूमिका में था। आर्य समाज का अतीत अत्यन्त प्रेरक उज्ज्वल, अनुकरणीय स्मरणीय एवं वन्दनीय रहा है। जितना गर्व-गौरव करें, थोड़ा है। वर्तमान अत्यन्त चिन्तनीय विचारणीय हो रहा है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। दैनिक, साप्ताहिक, वार्षिकोत्सवों, यज्ञ कथा आदि में उपस्थिति चिन्तनीय हो रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर लंगर भीड़ जुटाई जा रही है। पुराने विद्वान्, वक्ता, संन्यासी, भजनोपदेशक, कार्यकर्त्ता, सदस्य अधिकारी आदि जा रहे हैं, उस तीव्रता से नये लोग नहीं आ रहे है।। पहले भवन कच्चे होते थे, लोग विचारों, सिद्धान्तों, आदर्शो और आचरण से पक्के होते थे। आज उल्टा हो रहा है। भवन पक्के बन रहे हैं लोग जीवन व आचरण से कमजोर हो रहे हैं। तेजी से आर्य समाज अपने मूल सिद्धान्तों, उद्देश्यों, आदर्शो, विचारों से हट कर व भटक रहा है। आज आर्य समाज के पास भवनों, स्कूलों, संस्थाओं संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों में है। बाहर का कलेवर लम्बा-चौड़ा है, मगर आन्तरिक दृष्टि से स्थिति गंभीर व शोचनीय है। जो हमें लड़ाई संघर्ष विवाद, अज्ञान, अशिक्षा, ढोंग-पाखण्ड आदि के विरोध में लड़नी चाहिए थी, वह आपस में ही लड़ पड़े। आर्य समाज को बाहर से किसी ने कमजोर नहीं किया, वह अपनों से ही कमजोर हो रहा है। आपसी स्वार्थ, अहंकार के कारण विवाद व संघर्ष हैं। उसके मूल में एक मजबूत कारण यह भी है कि हमारे जीवन, विचारों व आचरण में धार्मिकता, अध्यात्मिकता, नैतिकता, तप, त्याग, सेवाभाव आदि की कमी हो रही है, ये बातें जीवन को संभालती व सन्तुलत रखती हैं। सन्ध्या व यज्ञ धार्मिक जीवन के आधार हैं। ऋषि का जीवन कह रहा है- भक्ति से शक्ति मिलती है। उन्होंने ईश्वरोपासना कभी नहीं छोड़ी। जो हमारे यज्ञ, कथा, सत्संग, कार्यक्रमों में सात्विकता धार्मिकता, स्वच्छता, शान्तिमय वातावरण, प्रेरक प्रभाव आदि होना चहिए, उसका तेजी से अभाव हो रहा है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। आज हमारे कार्यक्रम जलसा, जलूस, लंगर फोटो, माला, स्वागत, सम्मान, भाषण, प्रस्ताव योजनाओं आदि तक सीमित हो रहे हैं। क्रियात्मक व प्रेरक जीवन से दूर हो रहे हैं। जो आर्य समाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था, आज उसे सच्चाई व ईमानदारी से अपनी शुद्धि की जरूरत है। आर्य समाज की भ्रष्ट, स्वार्थ पदलिप्सा, अहंकार आदि की राजनीति ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित, कमजोर तथा प्रभावहीन बना रही है। भावनाशील ऋषिभक्त, आर्य विचारधारा, प्रेमी और समाज हितैषी लोग अन्दर से सुखी, बैचेन और आहत हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उन तक पहुंचने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्य समाज के पास भौतिक, अद्वितीय सम्पदा वैचारिक चिन्तन और मान्यताएं हैं। आज भी आर्य समाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी हैं। आज संसार सुविचारों के अभाव से जीवन व जगत को नरक बनाकर जी रहा है। आर्य समाज का जो जीवन-दर्शन है, वह हमें इहलोक और परमार्थ की सुखद-विचार दृष्टि देता है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व निर्माण उसका अन्तिम लक्ष्य रहा है। आज आर्य समाज जनता से कट व हट रहा है- आज युग मीडिया, विज्ञापन व प्रचार है। दुर्भाग्य है कि आज तक आर्य समाज अपना वैदिक चैनल नहीं बना सका है, जब कि हम महासम्मेलनों पर करोड़ों रुपये कुछ समय के लिए खर्च कर देते हैं। उतने में रचनात्मक प्रेरक उपदेशक विद्यालय व गुरुकुल चल सकता है। जोकि स्थायी निर्माण का कार्य है। जिनके पास सिद्धान्त, विचार, आदर्श, जीवन मूल्य, सत्यज्ञान और संस्कृत- संस्कृति बोध नहीं है वे मीडिया, चैनलों, सार्वजनिक मंचों पर छा रहे हैं। आर्य समाज के पास, वेदज्ञान, ऋषि परम्परा, यज्ञ, प्रेरक, सात्विक, आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण भजन, योग का सत्य स्वरूप आदि है, उनके द्वारा जनता को बुलाया व जोड़ा जा सकता है। आज हम आर्य विचारधारा और ऋषि को आम आदमी व युवापीढ़ी तक नहीं पहुंचा पा रहे हैं। पौराणिकों ने रामचरित मानस और हनुमान चालीसा को घर-घर तक पहुंचा दिया, सभी पढ़ व सुन रहे हैं, आर्य समाज वेदों को सरल भाव में घर-घर तक नहीं पहुंचा सका है। उस विलय पर गंभीरता से सोचने व कदम उठाने की जरूरत है। वेद की ज्योति जलती रहे, नारे से काम नहीं चलेगा। आज हम देश, काल, समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों, संन्यासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाज के पास युवकों को जोड़ने वाली प्रेरक संस्थाएं नहीं हैं जो आधुनिक समयानुसार उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवापीढ़ी भटकन अन्धविश्वास व अज्ञान में फंस रही है वह सत्य व शान्ति चाहती है। वह ढोंग-पाखण्ड, आडम्बर, गुरु, महन्तों, सन्तों आदि से तंग हो रही है। आर्य समाज के पास सद्ज्ञान विचार प्रेरणा व जीवनदर्शन है, किन्तु परन्तु....लेकिन हमें कहना आता है, करना नहीं आता युवापीढ़ी, भाषण नहीं आचरण देखती है। आर्य समाज को अपने स्वरूप को संभालने तथा पुनर्मूल्याकंन की जरूरत है। वर्तमान जीवन जगत को ज्वलन्त समस्याओं का समाधान वैदिक जीवन-दर्शन में है। अत: आर्यो उठो! जागो! सोचो! करो! यह समय विवाद का नहीं संवाद का है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। जिन उद्देश्यों, आदर्शो व सिद्धान्तों के लिए ऋषिवर ने आर्य समाज बनाया था, उन्हें समझो पढ़ो और आगे बढ़ाओ। यही वेद प्रचार है।

बोध कथा

84 लाख योनियों का चक्र

एक था बेचारा सूरदास। ऐसे दुर्ग में फंस गया, जिसमें भयानक अग्नि जल रही थी। कितने ही भयानक पशु वहां चिल्ला रहे थे। एक ओर यह झुलसा देनेवाली गर्मी, दूसरी ओर इन भयानक पशुओं की गर्जना और दहाड़। बेचारे सूरदास ने प्रयत्न किया कि दुर्ग से बाहर निकले, परन्तु जिधर भी वह जाता, उधर का द्वार उसे बन्द मिलता। 84 लाख द्वार थे, परन्तु बेचारे सूरदास को एक भी द्वार खुला नहीं मिला। भय और कष्ट से घबरा गया और चिल्लाकर बोला-''अरे, कोई मुझपर दया करके बताओ कि इस दुर्ग में कोई द्वार खुला भी है या नहीं?''

एक और व्यक्ति ने उसकी अवस्था देखी। उसके पास जाकर कहा-''सूरदास! 84 लाख द्वार हैं यहां, केवल एक खुला रहता है।'' सूरदास ने विनयपूर्वक पूछा-''कौन-सा द्वार?''

उस व्यक्ति ने कहा-''वह सामने वाली दीवार में है, परन्तु बहुत दूर। तुझे दिखाई देता नहीं। इधर से उस द्वार तक पहुंच न पायेगा। मेरे साथ आ। मैं तेरा हाथ इस दीवार पर रख देता हूं। इसको छूता हुआ चला जा। जहां खुला द्वार आयेगा, वहां से बाहर चले जाना।''

उस व्यक्ति ने सूरदास का हाथ रख दिया दीवार पर। सूरदास चलने लगा। परन्तु उसे खुजली की बीमारी थी। बार-बार खुजली उठती। वह खुजलाता और चलता जाता। जब वह खुले द्वार के पास पहुंचा तो पुन: खुजली जाग उठी। दीवार से हाथ उठाकर वह खुजाता हुआ बढ़ गया। फिर 84 लाख द्वारों के चक्र में पड़ गया।

आपको इस बेचारे सूरदास पर दया आती है। मन-ही-मन आप सोचते हैं, कितना अभागा है वह! परन्तु सोचो मेरे भाई! क्या आप स्वयं पर दया नहीं कर सकते? अरे, हम भी तो उस सूरदास की भांति हैं। 84 लाख योनियों के चक्र में पड़े हैं। 84 लाख बन्द द्वार हैं यहां। दु:खों-कष्टों की अग्नि जल रही है यहां। पाप-ताप के पशु दहाड़ रहे हैं। केवल एक द्वार खुला है- यह मानव-योनि। किसी ज्ञानी ने कृपा करके कहा-''इस द्वार से बाहर निकल जाओ।'' परन्तु हाय रे अभागे! इस खुले द्वार के समीप पहुंचकर तेरे अन्दर तृष्णा, विषय-वासना की खुजली जाग उठती है। दीवार से हाथ उठाकर तू खुजलाने लगता है। खुजलाता हुआ आगे बढ़ जाता है और फिर वही 84 लाख का चक्कर!

उस बेचारे अन्धे पर दया करते हो, अपने-आप पर नहीं कर सकते? कब तक भटकते रहोगे इस दुर्ग में, जहां दु:ख-ही-दु:ख हैं- कष्ट-ही-कष्ट? यह मानव-शरीर तुम्हारे समक्ष है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की खुजली में फंस गये तो द्वार फिर निकल जायेगा और यह निकल गया तो 'महती विनष्टि'- बहुत बड़ा विनाश होगा।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वैदिक धर्म और विज्ञान

- गौरीशंकर भारद्वाज

..... 'वैदिक धर्म और विज्ञान' के परस्पर सम्बन्ध पर प्रकाश डालने वाले प्रख्यात ब्रिटिश विद्वान एवं महान दार्शनिक W.D.Brown ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "The Superiority of the Vedic Religion" में लिखा है कि "Vedic Religion is a thoroughly scientific religion, where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy." अर्थात् वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है, जिसमें धर्म और विज्ञान साथ-साथ हाथ में हाथ डालकर चलते हैं। इसमें धर्म शास्त्र पूर्णतया विज्ञान ओर दर्शन पर आधारित है।.....

धर्म- सांख्य दर्शन में महर्षि कणाद ने धर्म का सम्पूर्ण अर्थ करते हुए कहा है कि ''यतोऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धि स धर्मः।'' अर्थात् जिससे इस लोक में सुख की प्राप्ति और परलोक की सिद्धि हो, उसे धर्म कहते हैं।

विज्ञान- विशिष्ट ज्ञान जिससे पृथ्वी और आकाश के रहस्यों की खोज का उद्घाटन होता है।

Encyclopedia Britainica में प्रयुक्त Religion धर्म का रूपान्तर नहीं है अपितु मजहब या पंथ का रूपान्तर है। वास्तव में मजहब या पंथ व्यक्ति विशेष द्वारा स्थापित व प्रचारित मत हैं जो तात्कालिक स्थानीय समाज में आयी कुरीतियों के सुधार के लिए प्रारम्भ किए गये किन्तु वे पृथ्वी के सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर आधारित नहीं हैं वे धर्म नहीं अपितु पंथ हैं जिनका एक पैगम्बर, एक पुस्तक और एक विशेष पूजा पद्धति होती है। इस प्रकार ईसाई व इस्लाम आदि मजहब या पंथ हैं जो विज्ञान विरोधी हैं।

महाभारत युद्ध के पहले वैदिक वांगमय में सभी आधुनिक आविष्कारों की उपस्थिति के संकेत मिलते हैं किन्तु महाभारत के पश्चात् आर्यावर्त्त के पतन के फलस्वरूप सम्पूर्ण वैदिक वांड्.मय तथा उसमें निहित वैज्ञानिक आविष्कार तिरोहित हो गये। 16वीं एवं 17वीं शताब्दी में यूरोप में नवजागरण काल के दौरान अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों का पुनरोदय हुआ, जिसके कारण अवैज्ञानिक, अन्धविश्वास व चमत्कार पूर्ण ईसाई पन्थ से वैज्ञानिकों का टकराव हो गया। राजकीय संरक्षण प्राप्त चर्च ने वैज्ञानिकों को नास्तिक घोषित कर दिया और चर्च द्वारा वैज्ञानिकों का उत्पीड़न किया जाने लगा। चर्च के अत्याचारों के शिकार होने वाले वैज्ञानिकों में गैलिलियो तथा ब्रूनो प्रमुख हैं। उनका अपराध यह था कि उन्होंने सिद्ध किया था कि पृथ्वी गोल है और वह सूर्य के चारों ओर घूमती है जबकि ईसाई पन्थ पृथ्वी को चपटी और स्थिर मानता है। गैलिलियो को जेल में डाल दिया गया और उसे भयंकर यातनाएं दी गईं जबकि ब्रूनों नामक वैज्ञानिक को 16 फरवरी 1600 में उस पर तेल छिड़क कर मार दिया गया। परिणामस्वरूप तथाकथित धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी हो गये।

पाश्चात्य विद्वानों को वैदिक धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप का ज्ञान होने पर अधिकांश वैज्ञानिकों का धर्म के प्रति विरोध कम हुआ ओर वैज्ञानिक पूर्वाग्रह त्याग कर धर्म और विज्ञान के सकारात्मक सम्बन्ध पर विचार करके सहमत हो गये। सन् 1914 में लन्दन के ब्राउनिंग हाल में ''धर्म और विज्ञान'' के सम्बन्ध का विवेचन करने के लिए प्रख्यात वैज्ञानिक सर आलवर जोसेफ लाज की अध्यक्षता में विश्व के 7 शीर्षस्थ वैज्ञानिकों का सम्मेलन हुआ, जिसमें सभी वैज्ञानिकों ने सर्वसम्मति से घोषित किया कि सच्चा धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं। सम्मेलन में हुए विचार-विमर्श को निष्कर्ष रूप में दर्शाते हुए "Science and Religion" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसके कुछ अंश निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत हैं:-

(1) ''एक बार आप इस बात को देखें कि अन्तःकरण एक बड़ा तत्त्व है। वह इस मशीन (शरीर) के बाहर का तत्त्व है। ऐसा नहीं है कि जब शरीर नष्ट हो जाता है, तब वह अपने अस्त्वि को खो देता है। हम जितने भी दिन पृथ्वी पर रहते हैं, उतने ही दिनों के लिए हमारा अस्तित्व परिमित नहीं है। हम बिना शरीर के भी रहेंगे। हमारा अस्तित्व बना ही रहेगा। हम ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि यह मत निश्चित तौर पर विज्ञान पर आधारित है।'' पृष्ठ-24

वास्तव में उक्त कथन वैदिक धर्म के सूक्ष्म शरीर तथा आत्मा के अमरत्व की पुष्टि करता है।

(2) ''और यहां पर निश्चित रूप से सही है कि धर्म से ही विकास के मूल्यांकन की अद्भुत कहानी पूर्ण होती है और पता चलता है कि धर्म से ही ब्रह्माण्ड के प्रयोजन का बोध होता है। वह अनन्त शक्ति जो सबके पीछे है, जो साधारण एवं भौतिक नहीं है अपितु इससे प्रगट होता है कि यह अनन्त शक्ति ही हमारा ईश्वर है।'' पृष्ठ -68

ब्रिटिश विद्वान Huxley के अनुसार "True science and true religion are twin sisters and the separation of either from the other is sure to prove the death of both. Science prospers in proportion as it is religious and religion flourishes in exct proportion to the scientific depth and firmnes to its basis."

अर्थात् सच्चा विज्ञान और सच्चा धर्म दो सगी बहनें हैं। उनकी पृथकता निःसन्देह दोनों को नष्ट कर देगी। विज्ञान जितना अधिक धर्मपरायण होगा, उसकी उतनी अधिक वृद्धि होगी एवं धर्म अधिक फलता फूलता है, जब उसकी वैज्ञानिक नींव गहरी और मजबूत हो।

Barns Von ने विज्ञान को purgatory of religion कहा है। उसका कथन है कि Study of nature purifies our ideas about God and reality. विज्ञान और धर्म आत्मा की अदृश्य शक्तियां हैं। विज्ञान से सत्य नियम उदय होकर धर्म के माध्यम से धारण किए जाते हैं।

वैदिक धर्म :- वैदिक धर्म शाश्वत, सार्वभौमिक एवं पूर्ण वैज्ञानिक धर्म है। वैदिक धर्म को सनातन धर्म कहा जाता है। क्योंकि यह सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर आज तक प्रवाहमान है। यह प्राकृतिक धर्म है क्योंकि यह प्रकृति के अनुकूल है और सूर्य, चन्द्र, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी, पर्वत, नक्षत्र, अन्तरिक्ष और वस्तुतः उन सबके पीछे विद्यमान उनकी आत्मा और शक्ति पर इनका दर्शन और व्यवहार आश्रित है। इसी कारण यह धर्म प्रकृति और मानव अस्तित्व के साथ समसामयिक बना रहता है। वैदिक धर्म प्राणी मात्र के कल्याण का धर्म है- यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः (यजुर्वेद-26/2) परमेश्वर ने सर्व हितार्थ एवं मोक्ष का सुख देने वाले चारों वेदों की वाणी भूमण्डल के सभी प्राणियों व व्यक्तियों को प्रदान की है।

वैदिक धर्म का मूल आधार **वेद, उपवेद,वेदांग ब्राह्मण ग्रन्थ एवं दर्शनशास्त्र** हैं। वेदों में सम्पूर्ण ज्ञान बीज रूप में विद्यमान है। वेदों में जीवन के सभी पक्षों यथा संस्कृति, कला, साहित्य, दर्शन, मनोविज्ञान, वाणिज्य एवं विज्ञान का समावेश है। वैदिक वाड्मय में धर्म नीति शास्त्र, दर्शन व मनोविज्ञान को **आध्यात्मिक विद्या** तथा विज्ञान को **आधभौतिक विद्या** कहा जाता है।

वैदिक धर्म के तीन मूल आधार हैं- ईश्वर, जीव, प्रकृति, जो अनादि और अनन्त हैं। ये तीनों नित्य हैं और जगत के कारण हैं। आधुनिक विज्ञान द्वारा ईश्वर, जीव, प्रकृति के सम्बन्ध में वैदिक दृष्टिकोण की निम्नलिखित रूप में सम्पुष्टि की गई है।

ईश्वर :- 'जन्माद्यस्य यत' (शारीरिक सूत्र-1/2)

अर्थात् ईश्वर, जिससे इस जगत का जन्म, स्थिति और प्रलय होती है, वही ब्रह्म जानने योग्य है। ईश्वर सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, सर्वव्यापक, दयालु, न्यायकारी तथा सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता और हर्त्ता है।

(1) संसार के महान वैज्ञानिक लार्ड कैल्विन ने घोषणा की कि ''यदि तुम काफी गम्भीरता से विचार करो तो विज्ञान तुम्हें ईश्वर में विश्वास करने के लिए बाध्य कर देगा।

(2) प्रसिद्ध प्राकृतिक विज्ञानविद् इर्विन विलियम नाब्लौक ने दृढ़ता पूर्वक कहा कि ''मैं परमात्मा में विश्वास करता हूं। मैं परमात्मा में इसलिए विश्वास करता हूं क्योंकि मैं यह नहीं समझता कि केवल 'अकस्मात' को प्रथम इलैक्ट्रोन या प्रोटोन अथवा प्रथम परमाणुओं के उदय का कारण माना जा सकता है। मैं परमात्मा में इसलिए विश्वास करता हूं क्योंकि चीजें जिस रूप में भी हैं। उनकी तर्क संगत व्याख्या केवल परमात्मा की दिव्य सत्ता को मान कर ही की जा सकती है।''

(3) प्रख्यात गणितज्ञ व रसायन शास्त्री जान क्लीवलैण्ड का कथन है कि ''हमारा तर्क संगत निष्कर्ष यह है कि न केवल सृष्टि की रचना हुई अपितु किसी ऐसे परम पुरुष की इच्छा और योजना के अनुसार सृष्टि की रचना हुई जिसमें बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा थी, जिसमें अपनी योजना के अनुसार सृष्टि को रचने और उसे जारी रखने का सामर्थ्य है तथा जो सर्वत्र और समस्त विश्व भर में उसे लागू कर सकता है। मैं उसी परम पुरुष को परमात्मा मानता हूं।''

(4) संसार प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक एल्वा एडीसन ने घोषणा की थी कि मैं गणित के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध कर सकता हूं। महान अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने कहा कि''मैं ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करता हूं जो इस विश्व की सुनियोजित व सुनियमित व्यवस्था के रूप में प्रगट हो रहा है। यह विश्व केवल संयोगवश सृष्टि नहीं है।''

- शेष अगले अंक में

प्रेरक प्रसंग

और लो, यह गोली किसने मारी

अब तो चरित्र का नाश करने के नये-नये साधन निकल आये हैं। कोई समय था जब स्वांगी गाँव-गाँव जाकर अश्लील गाने सुनाकर भद्दे स्वांग बनाकर ग्रामीण युवकों को पथ-भ्रष्ट किया करते थे। ऐसे ही कुछ माने हुए स्वांगी किरठल उत्तरप्रदेश में आ गये। उन्हें कई भद्र पुरुषों ने रोका कि आप यहाँ स्वांग न करें। यहाँ हम नहीं चाहते कि हमारे ग्राम के लड़के बिगड़ जाएँ परन्तु वे न माने। कुछ ऐसे-वैसे लोग अपने सहयोगी बना लिये। रात्रि को ग्राम के एक ओर स्वांग रक्खा गया। बहुत लोग आसपास के ग्रामों से भी आये। जब स्वांग जमने लगा तो एकदम एक गोली की आवाज आई। भगदड़ मच गई। स्वांगियों का मुख्य कलाकार वहीं मंच पर गोली लगते ही ढेर हो गया। लाख यत्न किया गया कि पता चल सके कि गोली किसने मारी और कहाँ से किधर से गोली आई है, परन्तु पता नहीं लग सका। ऐसा लगता था कि किसी सधे हुए योद्धा ने यह गोली मारी है।

जानते हैं आप कि यह योद्धा कौन था? यह रणबांकुरा आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध सेनानी 'पण्डित जगदेवसिंह सिद्धान्ती' था। तब सिद्धान्तीजी किरठल गुरुकुल के आचार्य थे। आर्यवीरों ने पाप-ताप से लोहा लेते हुए बड़े साहसिक कार्य किये हैं। आज तो चरित्र का उपासक यह हमारा देश धन के लोभ में अपना तप-तेज ही खो चुका है।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज के प्रचारार्थ तैयार की गई विभिन्न योजनाएं एवं मोबाइल एप्प : आर्यजन लाभ उठाएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ के अन्तर्गत संचालित

'सहयोग' आपके सहयोग से ला सका हजारों चेहरों पर मुस्कान

नाम आपका, 'सहयोग' आपका, पुण्य आपका, धन, यश, बल और कीर्ति भी आपकी

आर्य जनों के लिए विशेष सूचना

''सहयोग'' के लिए चाहिए आपका सहयोग

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर हमने यह विचार किया और महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना का शुभारम्भ किया गया ।

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान — **विनय आर्य**, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल, प्रधान — **जोगेन्द्र खट्टर**, महामन्त्री
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

विशेष निवेदन : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यह योजना अभी केवल दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों मे लागू की गई है। आप भी अपने क्षेत्रों में अपनी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत इस योजना को आरम्भ कर सकते हैं। - *महामन्त्री*

Veda Prarthana - 15

Always be Devoted to God and Live Virtuously Because We May Die Anytime

- Acharya Gyaneshwarya

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

Ashvatthe vo nishdanam parne vo vasatishkrta.

Gobhaj itkila asatha yatsanavath poorusham.

(Yajur Veda 35:4)

O Human beings listen! Ashvatthe vo nishdanam Your soul resides in a transient physical body, it is uncertain whether your body will be here tomorrow, parne vo vasatih krta the soul's stay in body is like a leaf quaking in a strong wind and may fall any time, or it is like dew drop on a leaf, it may roll down and drop from the leaf or it may evaporate by the sun's heat. Go bhaj it kila asatha you have become attached to the enjoyment/pleasures obtained by the indriyas-senses and motor organs, yatsanavath poorusham while you should have been devoted to reach Supreme Being (God), you need to redirect your life.

It is an eternal law of nature that our physical body is not permanent; instead it has a limited life span which may suddenly end at any time with our death due to a variety of reasons. However, most human beings usually do not remember this transient nature of our physical body and even if they hear or read about it, they tend to either forget it or remain in denial. Most persons especially the young have the mistaken belief that I am invulnerable and in the future (at least the near future) I would be just like I am today, I will be happy, healthy, strong, prosperous, fulfilled as well as I will be free from illness, getting old and far away from death. This belief often makes many persons selfish, self centered and/or vain, as also their belief in personal invulnerability makes some of them do wrong, bad or even evil deeds for the fulfillment of their selfish goals.

Death is one of those things that almost nobody wants, as well as most persons do not want to hear, read, learn or think about death and would rather shun the topic, However, like our inseparable shadow (when we are in light), death follows all of us from the moment we are born, nobody has ever escaped death. Many scientists are researching how to prolong life, keep it always youthful and perhaps make it immortal. Some wealthy persons have given considerable amount of money which after their death will keep their dead bodies preserved by cryogenics in a deep freeze with the hope that someday in the future they can be revived and start a new life. What a strange desire and expectation?

According to the Vedic scriptures, the greatest ignorance of mankind is that while a person may hear, see or learn of the deaths of many other known or unknown persons through personal observation or the news, nevertheless the person believes that he/she is not going to suffer a similar fate and die any time soon. There are instances when a person is a pallbearer to a friend's coffin but himself believes that he is not going to die like his friend.

God in Vedic scriptures is called Yamraj the Lord of death and He gives us death when our time is up based on our current karmas and past karmas in this and previous lives. In many mantras in the Vedas as also in this mantra, God in His message to human beings has cautioned, "O human beings! Always do virtuous deeds, remember, your life is like a leaf that has turned yellow during the fall season, is quaking in the wind and will drop from the tree at any moment with the draft of the breeze." The scriptures also cite another example to point out the transient nature of our life and physical body and why we should do virtuous deeds for the progressive uplift of our soul. The example relates that our life is like a dew drop that forms on a leaf during the night because of cold temperature.When the sun comes out in the morning, the dew drop shines for a while reflecting the sun's light but then either evaporates due to the warmth of the sun or rolls down from the edge of the leaf and falls on the ground. Similarly, when, where and how our present life will end, nobody knows. Nobody can predict how transient and fickle life can be. The meaning of the Sanskrit word sharir is that when the soul leaves the physical body will bcome cold and rot until cremated.

Therefore, God through the medium of this mantra informs and cautions us, "O human beings! You have become enmeshed in the fulfillment of sensual pleasures but pay no attention to uplifting your souls. You spend all your energy in various indulgences such as filling up your stomach with various delicious foods, decorating your physical bodies with cosmetics to make them more attractive." God further reminds us that if we spend all our abilities and energy to fulfill mental desires and sensual pleasures we are doomed to failure bcause the more we try to fulfill them, the more they increase like adding fuel to the fire. The result is that the indulgent person consumed by desire to fulfill sensual pleasures becomes a slave to his/har senses and desires just like a durg addict is a slave to his/har drug habit. Such indulgent person's mind becomes more and more restless and agitated as well as has less peace and joy. Moreover, the person's mind and intellect loses virmtuous values such as truth, honesty, generosity etc; instead it converts to bad or depraved adharmic values such as lust, greed, anger, selfishness, dishonesty, laziness and desire for quick rewards without having to work hard. Gradually such a person encounters failures in life, loses self-confidence and often starts doing cruel or vicious deeds. Such an asura person is not only self- destructive but also harms his immediate family, friends, the society at-large and eventually the nation and the world.

Dear God, by reading, learning and meditating on Veda mantras, it has become clear to us that living merely for the fulfillment of sensory pleasures is acting like an animal and will never uplift or enrich the soul. From now on we will not devote our life primarily to the fulfillment of sensory pleasures of the physical body that is prone to destruction and eventurally end up with emptiness and unhappiness in life. Instead, we will focus our life on recognizing our true eternal self i.e. our soul and its relationship with God. Once one can consciously become aware of one's soul as separate from physical body as well as being the master of one's mind and senses, one can control the future activities of the mind and senses away from wrong and non-virtuous direction towards virtuous deeds. Dear God, from now on we will completely refrain from all adharmic deeds such as lying, anger, lust, jealousy, morbid attachments to others, vanity, sloth and laziness etc. Instead, we will do virtuous deeds, make our souls more pure so the soul may attain Your realization. O Creator of the universe! Our Protector, Benefactor and Nurturer, the Source of all true knowledge You reward us human beings in a just manner based upon our deeds. Please have mecey on us so that we may make alll effort in attaining Your realization and by Your Grace we may find bliss and get rid of all unhappiness and miseries in life. Dear God, this is our sincere prayer to you from the bottom of our hearts that we may always follow Your teachings in life and with Your blessings progressively increase our knowledge, wisdom, strength, courage, joy and fulfillment in life.

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 28 (द) **छन्द रचना**

गतांक से आगे....

उपजाति - जिस छन्द में कोई चरण इन्द्रवज्रा का हो और कोई उपेन्द्रवज्रा का, उसे उपजाति छन्द कहते हैं। इसका लक्षण और उदाहरण पद्य में देखिए:

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

अर्थात् इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा अथवा अन्य प्रकार के छन्द जब मिलकर एक रुप ग्रहण कर लेते हैं, तो उसे उपजाति कहते हैं।

साहित्यसङ्गीत कला-विहीनः
साक्षात्पशुः पृच्छ-विषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशुनाम्।।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।
कुमारसंभवम्।।

मालिनी :- मालिनी 15 वर्णों का छन्द है, जिसका लक्षण इस प्रकार से है:

न-न-मयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

इसका अर्थ है कि मालिनी छन्द में प्रत्येक चरण में नगण, मगण और दो यगणों के क्रम से 15 वर्ण होते हैं और इसमें यति आठवें और सातवें वर्णों के बाद होती है। जैसे:

। । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

वयमिह परितुष्टाः वल्कलैस्त्वं दुकूलैः सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः।

स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला मनसि तु परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः।। वैराग्यशतक।।45

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

संगीतमय वेद कथा सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर के तत्त्वावधान में संगीतमय वेद कथा का 11 से 15 सितम्बर तक नगरवन पार्क में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ कैलाश कर्मठ ने वेद कथा को संगीत से मधुर सुरों में पिरोकर प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। श्री सुखबीर सिंह, प्रधान आर्य समाज सागरपुर ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दीं। -*बचन सिंह आर्य, मंत्री*

श्रावणी उपाकर्म एवं वेद कथा

आर्य समाज यमुना विहार 20 से 24 सितम्बर के बीच श्रावणी उपाकर्म एवं भव्य वेद कथा का आयोजन कर रहा है। जिसके अन्तर्गत सामवेदीय यज्ञ, वेद प्रवचन व भक्ति संगीत का भव्य आयोजन होगा। -*विश्वास वर्मा, मंत्री*

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज शालीमार बाग प्रांगण में शारदीय-नवरात्र के उपलक्ष्य में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन 21 से 29 सितम्बर के बीच आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य प्रद्युम्न शास्त्री एवं वेदपाठी ब्र. जगदीश आर्य जी होंगे। भजन श्री दिनेश पथिक जी प्रस्तुत करेंगे एवं उद्बोधन डॉ. महेश विद्यालंकार जी के होंगे। - *मंत्री*

52वां श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार महोत्सव

आर्य समाज रोहतास नगर का 52वां श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार महोत्सव 14 से 17 सितम्बर के बीच आयोजित किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत पं. रघुनाथ देव 'वैदिक भूषण' जी द्वारा जीवनोपयोगी प्रवचन एवं संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। अध्यक्षता श्री राज कुमार शर्मा (प्रमुख समाजसेवी) मानसरोवर पार्क, करेंगे। -*विकास कुमार शर्मा, मंत्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

रोहिंग्या मुस्लिम पर .....

आज इस्लाम में आस्था रखने वाले अनेकों लोग म्यांमार में हो रही हिंसा को बौद्ध आतंक के रूप में प्रचारित-प्रसारित कर रहे हैं। लेकिन जब इराक में यजीदी लोगों से लेकर बहुसंख्यक इस्लाम के द्वारा अन्य अल्पसंख्यक समुदाय पर हिंसक हमले होते हैं तो इसे इस्लामिक आतंकवाद का नाम नहीं दिया जाता क्यों? मुम्बई हमले के वक्त अल जजीरा की वेबसाइट ऐसी टिप्पणियों से भरी पड़ी थी कि मुसलमानों के लिये अल्लाह की शानदार विजय, मुम्बई में यहूदी केन्द्र में यहूदी रबाई और उसकी पत्नी की मृत्यु हृदय को सुख देने वाला समाचार इस्लामी मीडिया में बतलाया गया। हर किसी को याद होगा डेनमार्क के एक समाचार पत्र में प्रकाशित पैगंबर मोहम्मद के कार्टूनों पर हुई प्रतिक्रिया का आवेश जब अनेक देशों के झंडों और दूतावासों को आग लगायी गई थी। लंदन में प्रदर्शनकारियों की तख्तियों पर यहां तक लिखा था ''इस्लाम का अपमान करने वालों का सिर कलम कर दो।''

लगभग विश्व का हर एक कोना जिसमें स्कूल से अस्पताल तक, परिवहन से लेकर सड़क पर चलते और धार्मिक यात्राओं तक, सभा से लेकर संसद तक मसलन दुनिया इस्लाम के नाम पर दर्द झेल चुकी है। हर बार जानबूझकर पीड़ा पहुँचाने के लिये नये तरीके सामने आये, राजनीतिक नाटक बनाया गया, कलाकार अपनी भूमिका पूर्ण करते गये और मंच से बिदा होते ही उन्हें शहीद बताया गया। मैं कोई ज्यादा बड़े हिंसक कृत्य यहाँ नहीं दे रहा हूँ, न रोहिंग्या लोगों के साथ हूं बल्कि उस सच तक ले जा रहा हूँ जहाँ प्रदर्शनकारी पूछ रहे हैं कि पूरी दुनिया खामोश क्यों है?

-*राजीव चौधरी*

भजनोपदेशिका गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ

भजनोपदेशिका गुरुकुल में उन्हीं छात्राओं को प्रवेश दिया जाएगा जो जीवन में वैदिक सिद्धांत के अनुसार शिक्षा ग्रहण करना चाहती हैं तथा आर्य समाज का प्रचार करना चाहती हैं। गुरुकुल में हारमोनियम, ढोलक, चिमटा, तबला, वायलिन, बांसुरी आदि वाद्ययन्त्र सिखाने की व्यवस्था है। भजनोपदेशिका बनने की इच्छुक छात्राएं शीघ्र सम्पर्क करें-

प्रियंका भारती, 9694892735

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा...

किया गया जिसका विषय था, ''टीम भावना एवं व्यक्तित्व विकास''। कार्यशाला का संचालन श्री हर्षप्रिय आर्य (चीफ जनरल मैनेजर जे.बी.एम. ग्रुप गुड़गांव) एवं श्रीमती अन्नु बासुदेव (डायरेक्टर, स्कूल) ने किया। कार्यशाला में दिल्ली की अधिकांश आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप) एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य विद्या परिषद प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली जी ने समस्त कर्मचारियों का आह्वान करते हुए कहा कि ''आप चाहें कि अधिकारी लोग सब कर लेंगे ऐसा नहीं है आपके सहयोग के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। इस हेतु संस्था को अपना समझकर कार्य करना चाहिए और सभा के प्रति जिम्मेदार व वफादार रहना होगा। सिर्फ इतना ही नहीं आपको निष्पक्षता के साथ भी कार्य करना होगा और संस्था की मूलभूत चीजें ज्ञात होनी चाहिए। आप बड़े खुशकिस्मत हैं कि आप एक ऐसी संस्था के साथ जुड़े हैं जो देश व समाज में परिवर्तन लाना चाहती है।''

महाशय धर्मपाल जी ने गायत्री मंत्र पाठ के उपरान्त कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि ''आज आप सबके साथ बैठकर हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है। हमें किसी को छोटा-बड़ा नहीं समझना चाहिए। अपने कार्य को जिम्मेदारी और मन लगाकर करना चाहिए। संध्या और हवन जरूर सीखें। एक दिन हम और आप एक साथ बैठकर संध्या हवन करें। आप सब आपस में जुड कर आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ाते रहें। मेरा तन-मन-धन सब सभा को अर्पित है।''

महामंत्री श्री विनय आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द सेवाश्रमसंघ एवं आर्य समाज औचन्दी एवं दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय के समस्त कर्मचारियों का महाशय जी एवं अनेक आर्य समाजों से आये पदाधिकारियों से परिचय कराया। संचालक श्री हर्षप्रिय आर्य ने समस्त कर्मचारियों को कार्यकुशलता के छोटे-छोटे टिप्स बताए व आपस में मेल मिलाप के साथ कैसे कार्य करें पर प्रकाश डाला। श्रीमती अन्नू बासुदेव ने बिगड़े कार्यों को सुधारने, किसी का मन व विश्वास जीतने के तरीके को कुछ प्रतियोगिता के माध्यम से समझाया गया। सभा पदाधिकारियों द्वारा सबसे अधिक आयु व सबसे कम आयु के युवा को पौधा भेंट कर सम्मानित किया गया। शान्ति पाठ व जलपान के साथ कार्यशाला खुशनुमा माहौल में सम्पन्न हुई।

- **एस.पी.सिंह**

मायापुरी क्षेत्र में आर्यसमाज की गतिविधियों का पुनः संचालन

मायापुरी क्षेत्र में आर्यसमाज की गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इसके अन्तर्गत मायापुरी फेज-1 के मिथुन पार्क में साप्ताहिक यज्ञ एवं प्रवचन कार्य प्रातः 8:30 से 10 बजे तक किया जा रहा है। निकटवर्ती महानुभाव अवश्य पहुंचकर प्रचार कार्य में सहयोगी बनें।

- *रजनीश वर्मा, संयोजक (9811362087)*

विज्ञापन

वरिष्ठ नागरिकों के लिए शुभ सूचना

आयुधाम सोसाईटी सीनियर सिटीजन होम जो पिछले 25 वर्षों से वृद्ध लोगों के लिये सेवा का कार्य कर रही है आयुधाम सोसाईटी में नवीन भवन निर्माण के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के लिए आवासीय सुविधा का विस्तार किया गया है।

यदि आप में से किसी को आवश्यकता हो तो खुद आकर इस हरियाली भरे रोचक वातावरण को देखें या सम्पर्क करें। पता :- गाँव रेवला, खानपुर, झटिकरा रोड, (चौक से दो किमी.) नजफगढ़, नई दिल्ली-110043

अशोक आनन्द -9654783140
आर.पी. रहेजा - 9717054558

शोक समचार

मास्टर पूर्ण सिंह आर्य दिवंगत

आर्य समाज नरेला के पूर्व महामंत्री व संरक्षक मास्टर पूर्ण सिंह आर्य का 19 सितम्बर 2017 को 93 वर्ष की आयु मे उनके निवास स्थान मामुरपुर में हृदयगति रुक जाने के कारण निधन हो गया। मास्टर जी का अंतिम संस्कार कन्या गुरुकुल नरेला के निकट शमशान घाट में वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 24 सितम्बर को प्रातः 9 बजे उनके निवास पर सम्पन्न होगी।

श्री आनन्द कुमार कपूर नहीं रहे

आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार के कर्मठ मन्त्री श्री आनन्द कुमार कपूर जी का 65 वर्ष की अवस्था में 6 सितम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम सांस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 18 सितम्बर, 2017 से रविवार 24 सितम्बर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21–22 सितम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 सितम्बर, 2017

आर्यसमाज औचन्दी एवं सभा द्वारा संचालित
दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय औचन्दी

वार्षिकोत्सव एवं वेद सम्मेलन

आर्यसमाज औचन्दी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र में मानव मात्र की सेवा के लिए संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय औचन्दी का वार्षिकोत्सव के अवसर पर 24 सितम्बर को वेद सम्मेलन आयोजन किया जा रहा है। ऋग्वेद पारायण यज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी के ब्रह्मत्व में तथा भजनोपदेश श्री सहदेव बेधड़क जी के होंगे। इस अवसर पर माता चन्नन देवी हस्पताल की ओर से नेत्र, अस्थी, खून, एवं सामान्य जांच शिविर का आयोजन भी किया जाएगा।

– अश्विनी आर्य, चेयरमैन　　महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज का YouTube टीवी चैनल
20 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

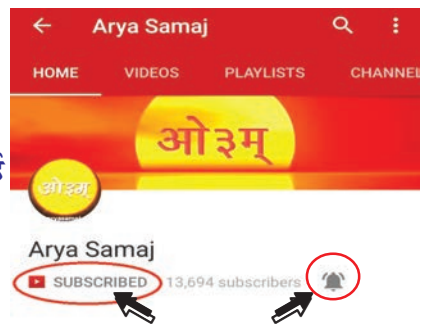

आप भी देखें और सब्सक्राइब करें; घंटी बटन को दबाकर नई वीडियो की सूचना प्राप्त करें। आप अपने कार्यक्रमों – भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। – महामन्त्री

रावण दहन
बुराई का प्रतीक मनोरंजन का साधन

सारे जमाने ने एक बार फिर पुतला जलाया, रावण बनाने में तन, मन, धन लगाया। पहले रावण इतना महंगा नहीं बनता था, साधारण वेश-भूषा में ही वह जलता था।

पर समय के साथ त्यौहार भी बदलते जा रहे हैं, बुराई के प्रतीक में भी मनोरंजन ला रहे हैं। ऊँच-नीच, भले बुरे का भेद ऐसे ही मिटेगा, देख लेना अगली सदी तक रावण ही फैशन में दिखेगा।

इसलिए रावण का कद हर दशहरे पर बढ़ता जा रहा, बुराई का प्रतिक गगन चुंभी तरक्की पा रहा। राम वर्षो से पुरानी वेश-भूषा और कद में ही दिखते हैं, आज की पीढ़ी इस भेद को देख कर यही सीखते हैं।

कि, जमाना बुराई को तरक्की दिलाता है, राम 6 और रावण साठ फुट का बनाता है। इसलिए जय भले ही राम की बोले पर हीरो तो रावण है, नवयुवक के भटकाव का सबसे बड़ा यह कारण है।

जो जैसा था वैसा हमने मानना छोड़ दिया, बुराई के प्रतीक को भी मनोरंजन से जोड़ दिया। इसलिए रावण बुराई के प्रतीक रूप में नहीं जलता है, मनोरंजन का साधन बना ये मेरे मन को खलता है।

प्रदर्शन ने दर्शन को लुप्त कर बदल दी दिशा, दिन के प्रकाश को ज्यूं मिटा दे आकर निशा। आगे आने वाली पीढ़ी सबकुछ उलटा समझेगी, अच्छाई और बुराई के भेद को ही तोड़ेगी।

इसलिए उद्देश्य समझकर पर्वो को मनाना जरूरी है, वर्ना पर्वो की सार्थकता ही अधूरी है।

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य　सह सम्पादक : विनय आर्य　व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान　सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह